International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-05-2020; Accepted: 22-05-2020; Published: 29-06-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 51-53

देवेन्द्र मेवाड़ी के नाट्य साहित्यः में बाल मनोविज्ञान

चंचल गोस्वामी [1], प्रिति आर्या [2]
[1] शोध छात्रा, एस0 एस0 जे0 परिसर, अल्मोड़ा उत्तराखण्ड, भारत
[2] एशोसिएट प्रोफेसर, एस0 एस0 जे0 परिसर, अल्मोड़ा उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
देवेन्द्र मेवाड़ी के नाटक जो कि विज्ञान विषय पर आधारित हैं। यह 'नाटक–नाटक में विज्ञान' नाम से पुस्तक रुप में संकलित है। यदि सम्पूर्ण पुस्तक का अवलोकन किया जाता है तो यह दिखाई देता है कि लेखक ने विद्यार्थियों के लिये उनकी रुचि के अनुरुप ,उनके मनोविज्ञान को समझते हुए लेखन किया है। बाल विज्ञान के चरण होते हैं, जिज्ञासा ,प्रेरणा, प्रसंसा, कल्पना,उत्साह इत्यादि। इनके नाटकों में यह चरण स्पष्टतः दिखाई देते हैं। इनके नाटकों में बच्चों का उत्साह ,उनकी जिज्ञासा तथा उनकी उनकी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए लेखन मिलता है, साथ ही बड़े ही सरल ढंग से उनकी समस्याओं का समाधान भी दिखाई देता है। इनके नाटकों को विद्यार्थियों के लिये प्रेरणा भी कहा जा सकता है। जिस प्रकार माता– पिता अपने बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान करना चाहते हैं ,उसी प्रकार इन नाटकों में भी विभन्न खोंजों का ज्ञान, इतिहास विषयक जानकारी, प्रकृति के विषय में जानकारी, प्राचीन प्राकृतिक समृद्धि और उसका ह्रास तथा समाज व्यवस्था का ज्ञान व रुढ़िवादिता से आगे निकलकर सही ढंग से जीवन जीने की प्रेरणा समाहित है।

मूल शब्दः देवेन्द्र मेवाड़ी, विज्ञान, नाटक, ज्ञान

प्रस्तावना
हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में वैज्ञानिक साहित्यकार के रूप में पहचाने जाने वाले देवेन्द्र मेवाड़ी जी का जन्म उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले के सुदूर एक बीहड़ गॉव कालाआगर में हुआ यह गॉव नैनीताल से लगभग 110 किमी0 की दूरी पर स्थित है।[1] एक किसान परिवार में जन्में मेवाड़ी ने क्षेत्रीय संघर्षों एवं अभाव के बाद भी आगे बढ़कर जीवन में विशेष मुकाम प्राप्त किया है। यह निरंतर विज्ञान लेखन कर एक ओर साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं, दूसरी ओर विज्ञान प्रसार कर जन–जन में वैज्ञानिक चेतना जागृत करने का भी कार्य कर रहे हैं।

देवेन्द्र मेवाड़ी के द्वारा लिखित 'नाटक'; 'नाटक–नाटक में विज्ञान' नाम से पुस्तक रूप में सन 2017 में प्रकाशित हुई हैं। इससे पूर्व यह नाटक रेडियो के माध्यम से भी प्रसारित किये जा चुके हैं। इन नाटकों में देवेन्द्र मेवाड़ी द्वारा विज्ञान क्षेत्र के विभिन्न आविष्कारों का वर्णन नाटक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिनका केंन्द्र बच्चे हैं जिनके ज्ञान की वृद्धि के लिये इन विज्ञान नाटकों का लेखन किया गया है। विद्यार्थियों के विद्या काल में विज्ञान की विभिन्न समस्याऐं जटिल रूप में सामनें आतीं हैं जिन्हें वह सिद्धान्त रूप में हल नहीं कर पाते उन्हीं समस्याओं को कथा रूप में प्रस्तुत कर विद्यार्थियों के लिये सरल बनाकर नाटक रूप में प्रस्तुत किया है।

इस पुस्तक के अंतर्गत विज्ञान से जुड़ी लगभग चालिस नाटकों को स्थान दिया गया है। जिसमें माइक्रोस्कोप, रूधिर रहस्य, आनुवांशिकी, रेडियोएक्टिविटी मलेरिया परजीवि इत्यादि विविध महत्वपूर्ण आविष्कारों पर आधारित नाटक लिखे गये है। इन नाटकों के अंतर्गत बाल मनोभावों का विशंष महत्व दिखाई देता है।

मानव मन के भावों को बताने वाले विज्ञान को मनोविज्ञान कहा जाता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत मनुष्य के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सभी अवस्थाओं का अवलोकन किया जाता है। इन सभी अवस्थाओं में मनुष्य के मन की भावनाओं एवं उनके शारिरिक व मानसिक परिवर्तनों का बारीकी के साथ अवलोकन किया जाता है। प्रत्येक अवस्था में मनुष्य के मनोभाव ,इच्छाऐं इत्यादि अलग–अलग होती हैं। इन सभी अवस्थाओं में विशेष है आरम्भिक अवस्थाएं। जिनमें से एक है बाल्यावस्था जिस समय बालक का विशेष रुप से विकास होता है। इस काल में बच्चे ज्ञान–विज्ञान की ओर अत्यधिक अग्रसर रहते हैं। यह वह काल है जब जीवन की महत्वपूर्ण एवं मूलभूत योग्यताओं का विकास होता है।

ब्लेयर जोंस एवं सिम्पसन के अनुसारः– ''बाल्यावस्था वह समय है, जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोंणों, मूल्यों और आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।''[2]

देवेंद्र मेवाड़ी ने भी मानव मन की भावनाओं को समझकर विशेषकर विद्यार्थियों की भावनाओं को समझकर उनकी समस्याओं के निदान के लिये हमारे आस – पास की विविध जानकारियों पर आधरित कहानियों को नाटक के माध्यम से अपने कथा साहित्य में उभारा है। लेखक ने मनोविज्ञान के संबंध में विशेष रूप से बाल मनोविज्ञान के संबंध में उनकी रूचियों इच्छाऐं इत्यादि इनके साहित्य में उभर कर आती है। इन्होंने बाल मन की भावनाओं, इच्छाओं, जिज्ञासाओं को बहुत ही सुंदर ढंग से उभारा है। मनोविज्ञान के अनुसार बाल्यावस्था के सहज परिवर्तन संवेग इत्यादि क्रमवत इनके बाल साहित्य में मिलते हैं। विद्यार्थियों के अध्ययन काल की कुछ विशेषताओं का यदि अवलोकन किया जाय तो ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की मुख्य विशेषता है उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति। इसी प्रवृत्ति के कारण बालक विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा नवीन खोंजों के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। देवेन्द्र मेवाड़ी ने बच्चों की इस विशेषता को ध्यान में रखा है। इनके साहित्य में सर्वप्रथम जिज्ञासा को तीव्र किया गया है फिर उसका समाधान प्रदान किया गया है। लेखक जब किसी आविष्कार के विषय में बताना चाहतें हैं तो वह एक कथानक निर्मित करते हैं जो हमारे सामान्य जीवन से जुड़ा होता है। यहीं घटित होने वाली सामान्य घटना पूर्व में हुई खोज के विषय में बताती है। यहीं से विद्यार्थियों के मन में जिज्ञासा का जन्म होता है कि हमारे जीवन की घटना से

पूर्व में हुई खोज कैसे संबंधित है और उससे हम कैसे किसी खोज से जुड़ी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर इनके नाटकों में आविष्कार की मूल कथा के साथ संबद्ध होकर निकलता है।

नाटक माइक्रोस्कोप में दादी के चश्में के माध्यम से सूक्ष्म जीव और लैंस की खोज के विषय में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई है। किन्तु यह जानकारी दादी के चश्में के टूट जाने से आरम्भ होती है जो चश्में के आविष्कार के विषय में सभी गूढ़ जानकारियों को विस्तार पूर्वक समझाते हुए नाटक को पूर्ण करते हैं।

अनवर: हर चीज तो चश्में से दिखाई नहीं देती दादी मां। बहुत छोटी चीजों की एक अलग दुनिया है जो न खाली आंख से दिखती है, न चश्मे से .....उन्हें देखने के लिये खास तरह के लेंस चाहिये.....''[3]

देवेन्द्र मेवाड़ी के साहित्य में बाल जिज्ञासा का स्वाभविक रूप देखने को मिलता है। बाल प्रवृत्ति होती है कि उन्हें हर चीज में कोई न कोई प्रश्न दिखाई देता है । वह अपने आस–पास की प्रत्येक चीज के विषय में जानना चाहता है और जब तक उन्हें अपने प्रश्नों का समाधान नहीं मिलता वह उसके विषय में प्रश्न करते ही रहते हैं। मेवाड़ी ने भी इन्हीं प्रश्नों को माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया है। बच्चों से जुड़ी प्रत्येक परिस्थिति को निर्मित करने का प्रयास किया है जिसमें बच्चों को प्रत्येक दृश्य में प्रश्न दिखाई देता है। यू तो यह प्रश्न शैशवावस्था से प्रारम्भ कर देते हैं , किन्तु वहॉ यह प्रश्न केवल अपने आस–पास की चीजों को पहचानने के लिये होते हैं। प्रश्नों का आकार और विस्तार तो विद्यार्थि काल में होता है।

गौरवः इसका मतलब ऐक्स रे की खोज रूंटगेन ने की थी?

अशोकः बिल्कुल ठीक।

गार्गीः उन्होंने क्या जादू दिखाया था बच्चों को पापा?[4]

बाल सुलभ जिज्ञासा का प्रथम स्तर यदि जिज्ञासा है तो उसका दूसरा स्तर है कल्पना । बच्चों की कल्पना शक्ति बड़ी ही प्रबल होती है। वह यदि किसी विषय में शाब्दिक रूप में जान लें तो उसके विषय में कल्पना निर्मित कर लेते हैं। विज्ञान भी तो ऐसा ही विषय है जो किसी परिकल्पना से आरम्भ होता है जहॉ एक सोच , एक कल्पना जन्म लेती है कि शायद ऐसा हो? वही परिकल्पना एक आविश्कार को जन्म देती है। वास्तव में बच्चों का मन एक आविष्कारक का ही होता है, जो सदा प्रश्न करता है उन प्रश्नों के उत्तर से एक कल्पना निर्मित करता है, फिर उसका समाधान प्राप्त करता है। बच्चों की जिज्ञासा कुछ इस प्रकार की होती है कि बच्चों का मन भी प्रश्न पूछते– पूछते एक काल्पनिक चित्र गढ़ने लगता है जिसमें उनके प्राप्त उत्तर चित्रित होते हैं। देवेन्द्र मेवाड़ी ने अपने साहित्य में उन्हीं चित्रों को साकार रूप प्रदान किया है। इन्होंने अपने साहित्य में प्रत्येक दृश्य में चित्रात्मकता का सुंदर प्रयोग किया है। इनके नाटकों में निर्मित परिकल्पना चाहे वह किसी आविष्कार में मग्न वैज्ञानिक का लैब हो अथवा उसके जीवन से जुड़ी परिस्थिति हो सभी का चित्र वह इस प्रकार निर्मित करते हैं कि बाल जिज्ञासु मन संतुष्ट हो सके और उसे अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में सहायता प्राप्त हो सके। बच्चों के कल्पना संसार को समझते हुए लेखक ने चित्रात्मकता का ऐसा सुंदर प्रयोग किया है कि उन्हें उनकी कल्पना के ही अनुरूप वह संसार रंगीन दिखाई दे।

एंटनः यहां आओ। इस छड़ को पकड़ो। हां..... अब पानी की इस बूंद को इस लैंस में से देखो....क्या दिखाई दे रहा है?

साथीः डरते हुए हें...हें... अरे ये क्या हैं एंटन। ये क्या दौड़ रहे हैं? ओफ! कितने सारे है!क्या हैं ये? तुम क्या दिखा रहे हो मुझे एंटन?

एंटनः ये सूक्ष्म जंतु हैं!जंतु। हमारी तरह जीते जागते जंतु। समझे?[5]

देवेन्द्र मेवाड़ी ने बच्चों की जिज्ञासा उनकी कल्पना को भली भांति पहचान कर उनकी रूचि अपुरूप लेखन किया है। विद्यार्थी जीवन में जहां ज्ञान–विज्ञान की इच्छा प्रबल होती है, वहीं प्रतिस्पर्धा की भावना भी प्रबल होती है। जिसके चलते बच्चे और अधिक अच्छा व बेहतर कार्य करने के लिये निरंतर प्रयासशील रहते हैं। देवेंद्र मेवाड़ी ने जिस उम्र के बच्चों का चित्र अपनी कहानियों में खींचा है वह बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक के उम्र के बालक हैं। जिनमें विद्यालयी स्तर पर प्रतियोगिता की भावना होती है। वह निरंतर सफलता के पथ पर बढ़ने का प्रयास करते हैं। इनकी यह प्रवृत्ति उन्हें आगे अवश्य बढ़ाती है, इसमें वह अपने मित्रों की भी सहायता करते हैं। उन्हें भी आगे बढ़ने में मदद करते हैं। लेखक यदा–कदा बच्चों से भिन्न–भिन्न प्रश्न कर उनका उत्साह बढ़ाते तथा उनकी प्रतियोगी भावना को ज्ञानवर्धन का माध्यम बनाते हैं। जब भी लेखक किसी विषय के बारे में बताते हैं, तो बीच में अथवा पहले उनके पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछते। जिससे बच्चे अपनी–अपनी तरह से उत्तर देते हैं। जिससे उनमें प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न होती है। यह भावना उन्हें और अधिक ज्ञान अर्जन व स्मरण पर बल देती है। प्रतियोगिता के इस भाव द्वारा लेखक ने बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति का प्रयोग उनके ज्ञानार्जन में वृद्धि करने के लिये किया है। लेखक ने प्रतियोगिता के भाव को स्वस्थ प्रतियोगिता के रूप में दिखाया है ।

''वंदनाः ये कौन हंस रहा है?यह एक गंभीर सवाल है और तुम हंस रहे हो? चलो मनीष तुम दो इसका जवाब।

म्नीषः मैम मैं इसलिए मनीष हूं या मैं ऐसा हूं क्योंकि मेरे माता पिता ने मुझे इसी रूप में जन्म दिया?

वंदनाः तुम्हारा जवाब काफी कुछ ठीक है लेकिन अभी बात स्पष्ट नहीं हुई।

अभयः मैं बताउं मैम?'[6]

लेखक ने अपने नाटको में विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण किया है। जिनसे बच्चे जीवन में कुछ सीख ले सकें। इस प्रकार लेखक ने बच्चों को हर क्षेत्र में सही सोच और सही दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने का प्रयास किया है।

बच्चों की जिज्ञासाएं कल्पनाएं जितनी अनंत होती हैं, उतनी ही उन्हें आवश्यकता होती है ऐसे मार्गदर्शन की जो उनकी जिज्ञासाओं को शांत करे और उनका मार्गदर्शन भी करे, ताकि वह अपने जीवन में उचित मार्ग पर चलें। लेखक ने विभिन्न कथाओं के माध्यम से उन्हें प्रेरित करने का प्रयास किया है। इन्होंने अपने नाटक में विभिन्न वैज्ञानिकों के जीवन चरित्र को उभारा है, जिन्होंने दिन–रात कड़ी मेहनत कर एक नवीन आविष्कार को जन्म दिया। इन्होंने ऐसे वैज्ञानिकों की जीवनी को भी उजागर किया जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार में जन्मे किंतु उनकी आगे बढ़ने की चाह को उनकी आर्थिक स्थिति भी न रोक सकी। वह निरंतर कठिन संघर्ष करते रहे, जूझते रहे, लेकिन अंततः वह प्रसिद्ध वैज्ञानिक बने।

नाटक 'मेघनाद साहा' में दादा–दादी, मेघा और प्रयास को साहा की जीवनी के माध्यम से आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं: ''देखो, प्रयास मेघा! मेघनाद साहा ने कैसे पढ़ा? वे डॉ0 अनंत कुमार दास के यहां गाय की देखभाल करते थे। घर के छोटे–मोटे काम कर देते थे और बाकी समय पढ़ने में लगाते थे। सप्ताह के अंत में गांव हो आते।''[7]

लेखक ने बाल पाठकों के लिये उनके ज्ञान वर्धन के साथ उन्हें प्रेरणा देने के लिये भी लेखन किया है। अपने नाटकों में विभिन्न वैज्ञानिकों के कठिन संघर्ष का वर्णन किया है । उनके संघर्षों का इतना सजीव वर्णन किया है कि बाल पाठकों में उनके जीवन की गाथा का विशेष प्रभाव पड़े और वह उनके जीवन से सीख प्राप्त कर सकें। जब लेखक उद्धव भराली , मेघनाद साहा, तथा उस्मान शेखानी की बात करते हैं तो उनके जीवन के संघर्षों का

इतना सजीव वर्णन करतें हैं कि पाठक का हृदय उनके संघर्षों से प्रभावित होकर उनसे सीख ग्रहण कर सके। लेखक ने नाटकों में दिखाया है कि गरीब परिवार में जन्म लेने के बाद भी परिवार में खाने के अल्प साधनों के बाद भी इन लोंगों ने कठिनाईयों के मध्य राह खोज निकाली और जीवन में एक महत्वपूर्ण मुकाम को प्राप्त किया।

मांः तेरा बापू किसी काम में कमा नहीं पाया। हमारे सिर पर 18 लाख का कर्जा छोड़ गया। कैसे उतारेगा इसे?[8] परिवार की इतनी दयनीय स्थिति कि खाने को दो समय की रोटी नहीं उस पर कर्ज फिर भी उद्धव भराली ने संघर्षों के मध्य रास्ता खोज निकाला और कई मशीनों का आविश्कार कर डाला।

पत्रकार–2ः कुछ मशीनों के बारे में बताइये?

उद्धवः वहां धान की थ्रेसर मशीन है,लहसून छीलने और तंबाकू की पत्तियों की कटाई की मशीन है। गन्ना छीलने,सफेद मूसली की जड़ों को छीलने,सुपारी छीलने, खाई खोदने,रेमी का रेशा निकालने,पैशन फ्रूट का जूस निकालने फॅसल की निराई – गुड़ाई करने की मशीन है।और हां चाय का मिनि प्लांट भी है । सब मेरा बनाया।''[9]

देवेन्द्र मेवाड़ी के नाटकों में केवल विज्ञान के खोज अथवा उनकी जीवनियों पर आधारित नाटक ही नहीं लिखे गए हैं। इन्होंने कुछ नाटक पर्यावरण, समाज व इतिहास को भी केन्द्र में रख कर भी लिखे हैं। इन नाटकों में भी बाल प्रेरणा को केन्द्र में रखा है। लेखक ने पर्यावरण के परिवर्तित होते स्वरूप समाज के द्वारा प्रकृति की अवहेलना उसके दुष्परिणामों से अपने बाल पाठकों को अवगत कराने तथा उनके हृदय में अपने पर्यावरण के प्रति चिंतन तथा उसके रखरखाव की चिंता भी जागृत करने का प्रयास किया हैं। जब वह ऐतिहासिक नाटकों का चित्रण करते हैं तो इतिहास से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को बारीकी के साथ साझा करते हैं। लेखक ने इतिहास की विशेष घटना को प्रसंग के रूप में प्रयोग किया है जिसमें जहांगीर के दरवार का चित्रण किया है। उस दरवार की कथा को प्रेरणार्थक रूप में प्रयोग किया है। जिसमें इतिहास के साथ विज्ञान का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। नाटक में इतिहास ,विज्ञान के साथ ही प्रकृति चक्र और उसके बिगड़ते रूप के प्रति चिंता भी व्यक्त की गई है।

गजाननः और कहां यमुना का वह निर्मल शीतल जलऔर अब आप...देख ही रहे हैं।...यह भी हमारी ही करतूत है। मिलों और फैक्ट्रियों का जहर इसमें घुल रहा है। शहर – शहर के गंदे नाले इसमें खुलते हैं।''[10]

इसी प्रकार हमारे देव वन, हमारे जीव– जंतु में भी इतिहास की विभिन्न घटनाओं का साक्ष्य देकर पर्यावरण और पेड़–पौधों पर हुए विभिन्न अत्याचारों तथा समाज के लोंगों के बलिदान का भावपूर्ण वर्णन किया है। इन नाटकों में भी लेखक ने अपने बाल पाठकों के लिये प्रेरणा देने तथा प्रकृति के प्रति संवेदना उत्पन्न करने का कार्य किया है।

इसी प्रकार समाज की व्यवस्था पर आधारित नाटकों में यू ंतो विभिन्न कार्यों के प्राचीन संसाधनों का महत्व बताया है; जैसे पानी से चलने वाली चक्की, कोल्हू से निकलने वाला तेल , पवन चक्की इत्यादि इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा बोए जाने वाले बीजों के विषय में भी, तथा उनका इतिहास भी बताया है। इसके साथ ही समाज की व्यवस्था के विषय में भी तर्क किया है कि केवल नारी ही कार्य क्यूं करे ? समाज में पुरूष और नारी के समानाधिकार के विषय में ,समाज में अच्छी परिवार व्यवस्था से अच्छे समाज के निर्माण का महत्व समझाया है।

निष्कर्षः देवेन्द्र मेवाड़ी के सम्पूर्ण नाटकों का अवलोकन किया जाता है तो यह ज्ञात होता है कि इनके नाटकों में बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए ,उनकी आवश्यकताओं के अनुरुप हर प्रकार के नाटक निर्मित किये गए हैं। इन नाटकों के माध्यम से वह जहां एक ओर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करेंगे वहीं कुछ सीख भी प्राप्त करेंगे। जिस प्रकार माता पिता अपने बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान करते हैं , उसी प्रकार देवेन्द्र मेवाड़ी ने भी अपने नाटकों में विज्ञान,इतिहास, प्रेरणा, समाज इत्यादि सभी विषयों को स्थान दिया है। इनके नाटक बच्चों के समग्र ज्ञान वर्धन में सहायक कहे जा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. मेरी यादों का पहाड़ पृ0 2 –;देवेन्द्र मेवाड़ीद्ध –नेश्नल बुक ट्रस्ट इण्डिया ;2013द्ध
2. शिक्षा मनोविज्ञान, पृ0 112– ;पी0 डी0 पाठकद्ध विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ;1975द्ध
3. नाटक–नाटक में विज्ञान पृ0 3 ;देवेन्द्र मेवाड़ीद्ध– विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान ए–50, इंसटीट्यूश्नल एरिया, सेक्टर–62 ;2017द्ध
4. वही पृ0 42
5. वही पृ0 4
6. वही पृ0 19
7. वही पृ0 242
8. वही पृ0264
9. वही पृ0 265
10. वही पृ0 283